

---

# Ambarishakritam Vishnu Stotram

——  
अम्बरीषकृतं विष्णुस्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : Ambarishakritam 2 Vishnu Stotram

File name : ambarIShakRRitaM2viShNustotram.itx

Category : vishhnu, viShNu, skandapurANa, stotra

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : skandapurANa | vaiShNavakhaNDa | puruShottamakhaNDa | adhyAya  
5/37-48||

Latest update : April 27, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 4, 2025

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Ambarishakritam Vishnu Stotram

---

### अम्बरीषकृतं विष्णुस्तोत्रम्

---



अम्बरीष उवाच ।

प्रसीद देव सर्वात्मन्नसङ्ख्येयशिरोभुज ।

असङ्ख्यघ्राणनयनपाणिपाद नमोऽस्तु ते ॥ ३७ ॥

षट्त्रिंशत्तत्त्वातीतोऽसि निष्प्रपञ्च प्रपञ्चकः ।

यतुर्विधजगद्धाम विश्वमूर्ते नमोऽस्तु ते ॥ ३८ ॥

अेकपादस्त्रिपादश्च तीर्थपादोऽतरिक्षपात् ।

यस्य पादोद्भवो गङ्गा पुनाति भुवनत्रयम् ॥ ३९ ॥

ब्रह्महत्यादिपापानां शोधकं यस्य नाम वै ।

कीर्तितं सर्वशुभं नमस्तस्मै शुभात्मने ॥ २.प.४० ॥

देव त्वन्नामकीर्त्यापि जायन्ते सर्वसिद्धयः ।

कौतुकात्त्वां हि मृग्यन्ति विद्वांसो बुद्धिशालिनः ॥ ४१ ॥

नाथ त्वत्पादसखिलं संश्रयात्तापहारकम् ।

तापत्रयाभिभूतस्य भक्तिं मेऽत्र दृढां कुरु ॥ ४२ ॥

अनन्यस्वामिनो मेऽद्य नास्त्यन्यत्प्रार्थनीयकम् ।

प्रणिपत्य जगन्नाथ त्वां प्रयाये सलस्रधा ॥ ४३ ॥

समस्तपुरुषार्थस्य बीजं त्वत्पादपङ्कजे ।

यावत्प्राणान्धारयामि तावद्भक्तिर्दृढास्तु मे ॥ ४४ ॥

सृष्टिं विनिर्ममे येमां यथा भक्त्या पितामहः ।

संहरत्यपिलं रुद्रो लक्ष्मीशैश्वर्यदायिनी ॥ ४५ ॥

दीनानुकम्पिस्तां भक्तिं प्रार्थये नान्यमानसः ।

अनाद्यविधापङ्केऽस्मिन्सुदृढे दुस्तरं भृशम् ॥ ४६ ॥

निमग्नस्य जगन्नाथ निरालम्बं प्रणश्यतः ।

मडामडिभ्रस्त्वद्भक्तोर्नान्यदस्ति परायणम् ॥ ४७ ॥

श्रुतिस्मृत्यादिसम्भिन्नमार्गाः सम्मोडतेतवः ।

त्वद्भक्तिमपलायेते न प्रवर्तितुमीश्वराः ॥ ४८ ॥

अनन्यशराणां स्वामिन्ननुकम्पय मां विभो ।

एति स्तुवञ्जगन्नाथपादपद्मान्तिके मुदा ॥ ४९ ॥

पपात दण्डवद्भूमौ प्रसीदति वदन्मुहुः ॥

एति श्रीस्कन्दपुराणे वैष्णवभाण्डे पुरुषोत्तमजगन्नाथमालात्म्ये

पञ्चमाध्यायान्तर्गतं अम्बरीषकृतं विष्णुस्तोत्रं समाप्तम् ।

स्कन्दपुराण । वैष्णवभाण्ड । पुरुषोत्तमभाण्ड । अध्याय ५/३७-४८ ॥

skandapurANa . vaiShNavakhaNDa . puruShottamakhaNDa . adhyAya 5/37-48..

Proofread by PSA Easwaran

---

—  
*Ambarishakritam Vishnu Stotram*

pdf was typeset on October 4, 2025

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

